Date 25 Feb
Page

2: A·R देसायी :—

अक्षय रमनलाल देसायी

जन्म – 1915 में 16 अप्रैल को नडियाद में हुआ।

मृत्यू — 12 नवम्बर 1994

देश के महान समाजशास्त्रीयों में प्रोफेसर अक्षय रमन लाल देसाई का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। A·R देसाई अपरीवर्तित मार्क्सवादी विचार धारा से जुड़े रहे। बड़ौदरा के सुप्रसिद्ध परिवार में इनका जन्म हुआ बचपन से ही इनके पिता इनके उपर रमन लाल वसंतलाल देसाई का प्रभाव रहा था क्योंकि वे एक बहुत बड़े साहित्यकार थे और उस समय गुजरात के युवकों से उसको प्रेरणा मिलते रहती थी। बड़ौदा सूरत और बम्बई में A·R देसायी ने छात्र आंदोलन में भाग लिया था। 1946 में G·S घुर्ये के निर्देशन में इन्होंने P·H·D की उपाधि प्राप्त की। A·R देसाई ने अपने जीवनकाल में कृषक समाज भारतीय राज्य समाज व्यवस्था प्रजातंत्रात्मक अधिकार नगरीय करण जैसे प्रमुख विषयों पर इन्होंने अपने कई महत्वपूर्ण लेख लिखे है।

Scanned with CamScanner

भारतीय राष्ट्रवाद :—

"सोशल बैगग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म" पुस्तक में A·R देसाई ने राष्ट्रवाद अर्थात भारतीय राष्ट्रवाद को प्रस्तुत की।

Social Background of Indian Nationalism

A·R देसाई ने अपनी पुस्तक भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि में राष्ट्रवाद के बारे में अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये है। A·R देसाई के अनुसार राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद का संबंध एक शक्तिशाली अवधारणा से है देसाई चाहते थे कि भारतीय समाज का विश्लेषण ट्रोटस्की के विचारधारा के अनुसार किया जाए। इन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर दो पुस्तके लिखी जिनमें (i) सोशल बैगग्राउंड आफ इंडियन नेशनलिज्म (1948) (ii) विसेन्ट ट्रेन्ड्स इन इंडियन नेशनलिज्म (1960) ये दो पुस्तक अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यही पहली पुस्तक इनके P.H.D के विषय का शोध था।

भारतीय राष्ट्रवाद में A·R देसाई ने ब्रिटिश काल में जो पुंजीवाद का विकास हुआ था उसका विवरण प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

भारतीय राष्ट्रवाद का उदय –

ब्रिटिश हुकूमत आने से पहले इस देश में कोई निजि संपत्ति नहीं थी। गांव की भूमि संपूर्ण ग्रामीण समुदाय की भूमि थी किसी एक व्यक्ति का भूमि पर निजि अधिकार नहीं था। उस समय की धारणा कुछ ऐसी थी सबये भूमि गोपाल अर्थात सारे गांव की भूमि किंतु ब्रिटिश सरकार ने भूमि सुधार आंदोलन के अंतर्गत भूमि को व्यक्तिगत रूप में बदल दिया। उसके बाद भूमि पर कर लगा दिया गया। भूमि बेची जा सकती थी। भूमि खरीदी या बेची जा सकती थी भूमि निजी संपति बन गयी थी यह पूंजीवाद का उदय था। और इसे ब्रिटिश उपनिवेशवाद में प्रारंभ किया गया। A. R देसाई ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि भारतीय समाज में पूंजीवाद का शुरुआत एवं उपनिवेशवाद का जन्म यहीं से शुरू हुआ। ब्रिटेन के कारखानों में निर्मित सामानों की तेजी से खपत और इसके लिए कच्चे माल की आपूर्ति के आर्थिक उद्देश्य वे एक विशाल प्रशासन को संगठित रखने भीतरी विद्रोह एवं बाहरी आक्रमण की रक्षा के उद्देश्य से भी रेलवे व परिवहन के अन्य संसाधनों की ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापना एवं उनका विकास प्रारंभ हुआ। भारत में रेलवे और सड़कों का निर्माण ब्रिटिश हित की दृष्टि से किया।

गया फिर भी भारतीय लोगो को वैलित रोजगार उपलब्ध कराने एवं पुराने स्थानीय संकुचित दायरे से निकलकर राष्ट्रीय चेतना जागरित करने मे इसकी महत्व भूमिका रही है। इसके माध्यम से प्रगतिशील साहित्य के प्रचार प्रसार एवं विभिन्न राजनीतिक दलो और संगठनो के विचारों के आदान प्रदान और आंदोलन के लिए कार्यक्रम निश्चित करने का अवसर मिला।

A.R देसाई राष्ट्रवाद को एक ऐतिहासिक वैचारिक रूप में देखते है। इसका विकास विभिन्न देशो मे पाये जाने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक दृष्टीकोण के संबंध में देखा जा सकता है। सामाजिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिवर्तन के कारण भारतमें राष्ट्रवाद का विकास 19वी शताब्दी मे प्रारंभ हुए कारको के कारण ~~सबसे~~ समझा जाता है। इसके कई महत्वपूर्ण उदाहरण है। यहां मानव जातियों मे विभिन्नता आ गई। जातियो की संख्या बढ़ गई। इस ~~विशेष~~ विदेशीसमूह भारत में आ गये। ~~[illegible]~~ नए क्षेत्र का उद्‌भव हुआ। देश की परंपराएं तथा संस्थाएं देश की शक्तिशाली बन गई।

A.R देसायी राष्ट्रवादी को एक ऐतिहासिक वैचारिक रूप में देखते है। इसका विकास विभिन्न देशों में पाए जाने वाले वर्गों में देखा जाता है। तथा विकास विभिन्न देशों मे पाए जाने वाले विभिन्न ~~सामाजिक~~ सांस्कृति ऐतिहासिक संदर्भ में समझा जा सकता

है। भारत में राष्ट्रवाद का विकास 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए कारणों के अनुसार समझना जा सकता है। उदा: इस प्रकार के है यहाँ।

देसायी अपनी दोनों पुस्तकों में स्थापित करते हैं कि हमारे यहाँ पूंजीवाद आने से पहले जो उत्पादन संबंध थे उन्हें अंग्रेजों ने समाप्त कर दिया। जजमानी व्यवस्था में परिवर्तन उत्पन्न हो गया। विनियम वस्तुओं के माध्यम से नहीं किया जाता था विनियम का साधन मुद्रा हो गया। अंग्रेजों ने आधुनिक पूंजीवादी संबंधों को प्रारंभ किया उनकी पुस्तकों का यही केन्द्र बिन्दु है। इस सम्पूर्ण मामले में A. R देसायी कहते हैं कि हमारे यहां पूंजीवाद तब आया जब हम गुलाम थे ब्रिटिश ऐसे देश से आये थे जो काफी उन्नत था जहां प्रजातंत्र था उन्होंने हमारे यहां आर्थिक संरचना को एकदम बदल दिया। एक केन्द्रीय राष्ट्र की स्थापना हुई। जहां उन्होंने आधुनिक शिक्षा एवं आधुनिक बर्बा व्यवस्था और तरफ से नयी व्यवस्था आरंभ की है। नई प्रक्रियाओं के सूत्रपात के परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रवाद का विकास हुआ। भारत में जो राष्ट्रवाद का विकास हुआ वह अचानक नही हुआ था ~~इसमें उपनिवेशियों~~ ~~हुम~~ उपनिवेशी की बढ़ोतरी के कारण हुई। इसका विकास कई युगों में हुआ। इस प्रारंभिक

विकास का अंतिम चरण तब आया जब गांधी जी के नेतृत्व में लोग संगठित होना प्रारंभ हुए। गांधी जी जनता के नेता थे वे जमीन से जुड़े हुए थे देश में पूंजीवाद विकसित हो गया था धन संचय टाटा बिरला पूंजीपति शक्तिशाली हो गये थे उन्होंने आजादी की लड़ाई में आर्थिक सहयोग किया यहां आकर देसायी कहते हैं कि स्वतंत्रता को इस लड़ाई में पूंजीवाद का प्रभुत्व बढ़ गया आजादी के बाद प्रभुत्व और शक्तिशाली हो गया आज स्थिति यह है कि उपनिवेशवाद और स्वतंत्र भारत में जो समस्याएं हैं इसका निराकरण पूंजीवाद ही नहीं कर सकता। देसायी ने भारतीय समाज के राष्ट्रवाद को समझने का पूरा प्रयास किया और अपने विचारों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

A.R देसायी का मार्क्सवादी सिद्धांत :-

अक्षय कुमार अमन लाल देसायी G.S घुरिये के निर्देशन में अपना कार्य किया। G.S घुरिये हिन्दू या ब्राह्मण समाजशास्त्र के प्रणेता और A.R देसायी समाजशास्त्र के संदर्भ में मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
A.R देसायी ने मार्क्सवाद को लेकर कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बातों को उजागर किया जो आज भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं भारत में एक पुंजीवाद राज्य है। इस राज्य की प्रकृति क्या है? और पूंजीवाद किसे कहते हैं ऐसे गई प्रश्न है जिसे देसाई ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है A.R देसाई के आलोचकों का कहना था कि देसाई मतवादी (सोच) से मार्क्सवादी थे। मार्क्सवादी विचारधारा से थोड़ा भी इधर-उधर होना इन्हें स्वीकार नहीं था। मार्क्सवाद में कई संसोधन होने के बाद भी A.R देसाई ने अपने आप में परिवर्तन नहीं लाया इसी कारण इन्हें आप बोल चाल की भाषा में ठेठ मार्क्सवादी थे। घनश्याम साह ने अपने पुस्तक "कैपिटलिस्ट डेवलपमेंट (capitalist De
देसाई को यांत्रिक मार्क्सवाद भी कहा जाता है।

मार्क्सवादी किसे कहते हैं

A. R देसाई की कोई भी व्याख्या तब तक अधूरी है जब तक हम मार्क्स को नहीं समझ लेते कार्ल मार्क्स ने अपने सिद्धांत को बड़े विस्तार से लिखा है। उन्होंने राजनीतिक गति-विधियों में भी भाग लिया था। मार्क्सवाद के सिद्धांत का सबसे बड़ा पहलू यह था कि पूंजी का मालिक कौन है? कहने का तात्पर्य यह है कि जो पूंजी का मालिक है वही उद्योग का मालिक होगा। और उसके भीतर कार्य करने वाले व्यक्ति पूंजी मालिक के श्रमिक होंगे। मार्क्स के शब्दों में कहा जाए तो उत्पादन की शक्तियां उत्पादन को बढ़ाने में उत्तरदायी होते हैं संपत्तियां पूंजी के मालिक के साथ श्रमिकों से संबंधित होते हैं ये श्रमिक अतिरिक्त मूल्य या मुनाफे के हकदार नहीं होते इस कारण आज की पूंजीवादी व्यवस्था में दो वर्ग पाये जाते हैं। ये वर्ग बराबर संघर्ष करते रहते हैं और अंत में समाजवाद या साम्य-वाद का उदय होता है।

A. R देसाई भी कुछ इसी तरह के मार्क्सवादी थे। कुछ इसी तरह के मार्क्सवाद से

जुड़े हुए कुछ पहलुओं को भारतीय समाज में लागू किया है वे कहते है कि भारतीय राज्य अपने आप में पूंजीवादी है वह अतिरिक्त लाभ यानी मुनाफे का मालिक पूंजीपति की तरह वह भी शोषण करता है इसे हटाकर समाजवाद लाना होगा मार्क्स समाजशास्त्री नहीं थे पर उनके सिद्धांत में समाजशास्त्र है। A.R देसायी समाजशास्त्र में M.A किये थे समाजशास्त्र के प्रोफेसर थे और इन्होंने समाजशास्त्र को मार्क्सवाद में खोजा है कहा जाए तो मार्क्स का संबंध समाज से था और A.R देसायी भी समाज को स्वयं से जुड़ा मानते थे।

* A. R देसायी के महत्वपूर्ण पहलू :-

1. समग्र एवं संदर्भ निर्दिष्ट :- देसायी के अनुसार मार्क्सवादी दृष्टीकोण अकादमिक सीमाओं से बंधा नहीं है यह समाज और सामाजिक परिवर्तन को समग्र दृष्टी से देखता है और इस दौरान यह स्वयं को किसी सिद्धांत तक सिमित नहीं रखता है यह सामाजिक पहलूओं को उनके मूल से अलग नहीं करता बल्कि स्वयं अध्ययन करता है। मार्क्सवाद इन पहलुओं का सम्पूर्ण अध्ययन

Scanned with CamScanner

हर एक बात को ध्यान में रखकर करते हैं तो इसलिए की जो भी कार्य किये गये है या उसे उसके भी पीछे के हर एक तथ्य को जानना इसलिए आवश्यक हो जाता है। क्योंकि किसी विशेष सामाजिक व्यवस्था में वह किस तरह से जुड़ा हुआ है। इस तरह से सामाजिक व्यवस्था का सम्पूर्ण विश्लेषण संभव हो पाता है।

२. ऐतिहासिक :— मार्क्सवादी दृष्टीकोण इस बात पर जोर देता है कि इस किसी समाज का अध्ययन स्थैतिक ढाँचे के बजाए ऐतिहासिक परिवर्तनवादी व्यवस्था के तौर में किया जाना चाहिए। किसी सामाजिक व्यवस्था में ऐसे विरोधाभासी बलों का समावेश होता है जो या तो व्यवस्था को अस्तित्वमान बनाए रखने के लिए परिवर्तनशील रहते है। यह फिर इसी को नष्ट करने के लिए जोर लगाते है इस प्रकार कोई समाज उभरते हुए विकासशील उत्तरवर्ती झुकाव की ओर बढ़ते हुए नजर आता है जो अंत: नये और उच्च सामाजिक व्यवस्था से जुड़ जाता है। ऐतिहासिक दृष्टीकोण के माध्यम से मार्क्सवाद समाज के उन दोनों कारकों को चिन्हित करने पर बल देता है। जो संरक्षण का कारण बने और जिनके

वजह से परिवर्तन हुआ। यह विकासवादी और परिवर्तनकारी पहलुओं को ऐतिहासिक आधार पर तय करता है। देसाई बताते हैं कि आधुनिक समाजशास्त्र से इतर मार्क्सवाद संपत्ति संबंधों को केन्द्रीय महत्व देता है इसका तात्पर्य भौतिक जीवन के उत्पादन के तरीके से है जो मार्क्सवादी दृष्टिकोण की बुनियादी श्रेणी है। इस के लिए देसाई ने अपनी पुस्तक में "Social background of Indian Nationalism" 1948 में परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए एक सदी से अधिक काल में आये बदलाओं का अध्ययन किया है। देसाई ने भारतीय समाज में सामंतवाद से लेकर पूंजीवाद तक व्यवस्था में आये परिवर्तनों को स्पष्ट करने के साथ वर्गों और राष्ट्र के बीच उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद के संदर्भ में अंतर-संबंधों को भी उजागर किया है। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के कारण ने बदलाव और इनके चलते वर्गीय ढांचे वर्गों के अंतर संबंधों और इन सबके बीच उत्पादन व्यवस्था के पूंजीवादी व्यवस्था विकास का अध्ययन किया है।

3. मूल्यनिरपेक्षता का विरोध :- देसाई के दौर में समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव विज्ञान का

अध्ययन ऐसे वैज्ञानिक तरीको पर आधारित था। जिसमें टाँचागत तरीके को मूल पहलू माना जाता था। समाज के वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन का अर्थ था कि तथ्यों को मूल्य रहित होना जरूरी है। हालांकि वेसायी ऐसे तरीके के विरोधी थे। जो सिद्धांत और व्यवहार वह तथ्य और मूल्य को अलग करते हो। मार्क्स की तरह वेसायी भी मानते थे कि तथ्य और मूल्य संयुक्त है और इन्हें विभक्त नहीं किया जा सकता। वेसायी बताते है कि मार्क्सवादी की बुनियाद ही मूल्य आधारित है। मार्क्सवाद के मान हासिल करने का मकसद स्वलाभ नहीं है। बल्कि सामाजिक परिवर्तन है। वेसायी के अनुसार दर्शन और राजनीतिक विचारधारा के रूप में मार्क्सवाद सामाजिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष का तरीका और पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था को नष्ट कर साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना का जरिया है।

मार्क्सवादी उपागम द्वारा भारतीय समाज का विश्लेषण :—

मार्क्स का कहना था कि किसी भी समाज में उपसंरचनाओं की निर्मितियों को हम ऐतिहासिक आधार पर समझ सकते है। इसलिए मार्क्सवादी उपागम किसी भी समाज में यथा स्थितिवादी शक्तियों और परिवर्तन की

Scanned with CamScanner

शक्तियों को समझने की कोशिश करता है समाज में एक नये विचार की शक्ति में की गई पहचान का यह प्रयास, उच्च स्तर पर मानवता के आधारों को बदल देने के आधारों के रूप में भी पहचाना जा सकता है। देसाई का यह विचार है कि सामाजिक यथार्थताओं के अब तक किये गये दावे सत्य नहीं हैं। जो कुछ भी समझा गया है वह पूंजीवादी विचारधारा से ओत-प्रोत है। इसलिए सामाजिक व्यवस्था / यथार्थता को संपत्ति संबंधों के आधार पर समझा जाना चाहिए। देसाई ने पद्धति को इसी प्रकार से व्यवहार में लिया है। ~~मार्क्स~~ मार्क्सवादी उपागम यह भी बताता है कि देश में किस प्रकार से सामाजिक रूपांतरण हो रहा है। उसे समझने के लिए भारतीय समाज में स्थित संपत्ति संबंधों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपागम के उपयोग में आर्थिक पक्ष के प्रत्येक आधार को समझने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी विशिष्ट समाज में ~~स्थिति~~ स्वायत्त या अलग मानवीय संस्थात्मक आधारों को नकारने की आवश्यकता नहीं है। देसाई का कहना है कि यदि हम भारतीय समाज को समझना चाहते हैं तो जाति, आदिवासी, समूहों, धर्म व भाषायी समूहों

और विशिष्ट सांस्कृतिक तत्वों को नकारने की आवश्यकता नहीं है। भारतीय समाज में व्याप्त परंपराओं को भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। मार्क्सवादी उपागम इन तथ्यों के संपत्ति संबंधों की संरचना में हस्तक्षेप और उनके योगदान की चर्चा करना चाहता है। मार्क्सवादी उपागम की रुचि औद्योगिक संबंधों के अध्ययन के रूप में है। ये संबंध श्रमिक प्रबंधन के बीच के नहीं अपितु पूंजीपति व श्रमिकों के बीच के संबंधों से संबंधित है इसका संबंध राज्य के पूंजीवादी चरित्र से भी है सामाजिक परिवेश में उभर रहे ग्राम, नगर, शिक्षा और अन्य विकास योजनाओं के संदर्भ बन रही संरचना के साथ जोड़े जा सकते हैं। केन्द्र ज्ञान को प्राप्त करने के प्रयासों और उसके लिए राज्य द्वारा वित्त प्रबंधन का भी अध्ययन किया जा सकता है जिससे यह मालूम पड़ सके कि क्या यह सब पूंजीवाद आधार का जन्म हेतु हुआ? मार्क्सवादी उपागम इन मिथकों को भी तोड़ सकता है जो पूंजीवादी राज्य पैदा करता है संविधान एक ~~ई~~ बुर्जुआ उत्पाद है। जिसका नेतृत्व पूंजीवादी है और सामाजिक तथा अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी रास्ते की तरफ ले जा रहा है। किसी समाजवादी समाज की घोषणा धोखा है सीधे सामान्य जन को मूर्ख बनाने जैसा है।

कोई भी आविष्कार और नया प्रचलन वस्तुतः पूंजीवादी व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास है। देसाई के अनुसार बुर्जुआ वर्ग भारत में प्रभुत्वशाली वर्ग है भारतीय समाज पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पर केन्द्रीत है भारत की संस्कृति वस्तुतः प्रभुत्वशाली बुर्जुआ वर्ग की संस्कृति है। भारतीय पूंजीवाद समाजवादी पूंजीवाद का प्रतिबिंब है। भारत में पूंजीवाद तब आया था जब पूंजीवादित देशों में स्वयं पूंजीवाद संकट में था। सत्ता में स्थित बुर्जुवा स्वयं यह नहीं समझ रहे थे कि यह संकट क्या है? इसलिए वे तार्किक तथा भौतिकवाद के दर्शन को छोड़ रहे थे और धार्मिक मिथकीय आधारों को स्वीकार कर रहे थे। देसाई का तर्क है कि भारतीय बुर्जुवा मूलभूत रूप से धर्मनिर्पेक्ष रूप में एक प्रजातांत्रिक राज्य बना रहे थे। राज्य आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी उदारवादी प्रजातांत्रिक शिक्षा का संचालन कर रहा था यह वर्ग वस्तुतः सांस्कृतिक पुनरुत्थानवादी धार्मिक व दार्शनिक अवधारणाओं का समर्थक प्रचारक व प्रसारक था यह वर्ग इस मिथकीय संस्कृति का भी वाहक था। ये जो आज प्रभुत्व संस्कृति के रूप में हम भारतीय जनों में देखते हैं इस संस्कृति की सामाजिक भूमिका प्रतिक्रियावादी है क्योंकि यह अपने भौतिक और सामाजिक संसार का गलत चित्र प्रस्तुत करती है। ऐसा विश्लेषण सही चैतन्यों

Scanned with CamScanner

को पैदा नहीं करता और समाज के सही समाधानों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करता है।

निष्कर्ष:— इस अध्याय में हमने ए.आर.देसाई की कृतियों पर अपना ध्यान केन्द्रीत किया जो यह समझाने का प्रयास है कि भारतीय समाज को विश्लेषित करने में मार्क्सवादी उपागम कैसे प्रयुक्त किया जा सकता है। भारतीय सामाजिक यथार्थता को समझने के लिए मार्क्सवादी उपागम का उपयोग किया जा सकता है। "The social Background of Indian nationalism" भारतीय समाज का भौतिकवादी विश्लेषण है वे भारतीय समाज के रूपांतरण को समझने के लिए ऐतिहासिक आधारों को उचित मानते है उन्होंने इस बात की चर्चा भी की है कि किस प्रकार गुणात्मक रूपांतरण ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था को बदला। अंत में यह कहा जा सकता है कि भारतीय सामाजिक यथार्थता को समझने के लिए देसाई सदैव मार्क्सवादी उपागम पर जोर देते रहे भारतीय समाज के संबंध में अपनी अन्य रचनाओं में भी उन्होंने मार्क्सवादी विश्लेषण पर जोर दिया।

Scanned with CamScanner